MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-32, Vol-06 Oct. to Dec. 2019

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

विद्यावार्ता

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

Oct. To Dec. 2019
Issue-32, Vol-06

Date of Publication
01 Dec. 2019

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

40) उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की संवेगात्मक स्थिरता ...
डॉ० तबस्सुम नाजिम, मेरठ ||172

41) आधुनिक संस्कृत कवि प्रो. हरिदत्त शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक ...
संदीप कुमार झा, पटना ||176

42) जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में राजनीतिक यथार्थ
डॉ. रजनी शिखरे, जि. बीड, (महाराष्ट्र) ||182

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

42

जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में राजनीतिक यथार्थ

डॉ. रजनी शिखरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष,
र.भ.अट्टल महाविद्यालय गेवराई, जि. बीड, (महाराष्ट्र)

****

हिंदी भाषा में ग़ज़ल लेखन की शुरुआत अमीर ख़ुसरो, कबीर, भारतेंदु, 'निराला', त्रिलोचन, शेमशेर बहादुरसिंह एवं हनुमन्त नायडु आदि ग़ज़लकारों ने की है। इस टूटती एवं बिखरती परंपरा को दुष्यंतकुमार ने एक नया मोड़ दिया है। फारसी परंपरा में पली-बढ़ी ग़ज़ल की परंपरा में प्रेम, इश्क एवं विरह की बातों को व्यक्त करती हुई उर्दू में दिखाई देती है। परंतु 1960 के पश्चात साहित्य में जो नए मोड आये है उसको उर्दू ग़ज़ल ने स्वीकार किया है। भारतीय भाषाओं में जो समकालीनता का परिवेश निर्माण हुआ है उसकी समसामायिकता हमें हिंदी ग़ज़ल में देखने को मिलती है।

हिंदी ग़ज़ल दुष्यंतकुमार की लेखनी से निखरकर पाठकों के सामने आयी है। उसने हिंदी साहित्य में अपनी नयी जमीन तैयार कर दी है। दुष्यंतकुमार के बाद ग़ज़ल लेखन की एक बाढ़-सी आ गयी है। परंतु यह बाढ़ एक होड़-सी लगती है ऐसा हिंदी के समीक्षकों का कहना है। परंतु यह होड नहीं है। स्वयं को नयी विधा में अभिव्यक्त करने का प्रयास इन लोगों ने किया है। मोहभंग एवं भ्रष्टाचार ने भारतीय राजनीति के नये रुप को सामने लाया। उसका यथार्थ रुप समकालीन हिंदी ग़ज़लकारों ने प्रस्तुत कर शोषण, अन्याय एवं अत्याचार के खिलाफ विद्रोह का रास्ता प्रशस्त किया है।

दुष्यंतकुमार के बाद हिंदी ग़ज़लकारों में बहुत सारे ग़ज़लकार सामने आये हैं। उसमें अदम गोंडवी, राजेश रेड्डी, अशोक अंजुम, देवेंद्र आर्य, जहीर कुरेशी, गिरीराजशरण अग्रवाल, ज्ञानप्रकाश विवेक आदि शीर्षस्थ ग़ज़लकार है। जहीर कुरेशी के ग़ज़लों में समसामायिक समस्या, भ्रष्टाचार, नारी शोषण, समस्याओं के साथ ही राजनीतिक विसंगतियाँ, कुरुपता, भ्रष्टाचार एवं राजनीति का यथार्थ रुप प्रस्तुत किया है।

वर्तमान समय में राजनीति का रुप ही बदल गया है। सत्य, निष्ठा, सेवा, त्याग, जनता, कल्याणकारी राज्य, रामराज्य आदि बातों को लेकर चलनेवाली राजनीति आज-कल केवल किताबों में सीमित रह गयी है। समाज में स्वार्थ, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, गुंडागिरी, साम्प्रदायिकता, धार्मिक विवाद आदि समस्याएँ स्वयं राजनीतिक लोगों द्वारा निर्माण की गयी है। राजनीतिक नेताओं द्वारा जो दलबदलू एवं स्वार्थ की प्रवृत्ती पनप रही है। उसका यथार्थ चित्रण जहीर कुरेशी ने गणिका के समान किया है। उनके ग़ज़ल में देखिये-

"आज भी तो है सियासत एक गणिका की तरह
इस सियासत ने मुझे भी आजमाया है बहुत।"[1]

राजनीति प्रत्येक चौराहे पर खड़ी होकर आम आदमी को छल रही है। उसको विभिन्न समस्याओं के कटघरे में खड़ा कर रही है। ग़ज़लकार जहीर कुरेशी कहते है कि राजनीति प्रत्येक कदम पर मौजूद है। परंतु इस गंदी राजनीति को डरना नहीं है। उसके साथ संघर्ष करना आवश्यक है। जहीर के अनुसार राजनीति के साथ खिलाडी के समान लड़ना आवश्यक है। गाँव की यथार्थ परिस्थिति एवं दुर्दशा को सुधारना एवं समझना है तो वहीं जाना आवश्यक है। कमीशन बिठाकर शहरों से निरिक्षण कर अहवाल रखनेवाले इस राजनीतिक कार्यपध्दतियों पर जहीर प्रश्न उठाते हैं। उनके शेर देखिए-

"हर कदम पर सियासत है, इधर से देखिए
जीवन को खिलाडी की नजर से देखिए
देखना है गाँव तो फिर गाँव जाकर देखिए
गाँव को मत मुंबई जैसे शहर से देखिए।"[2]

सर्वेक्षण और आयोग की बहुत सारी बातें केवल कागजात पर दिखाई देती है। इसलिए उसको असलियत में उतारने के लिए जहीर कुरेशी कोशिश कर रहे हैं। राजनीति में हमें घराणेशाही एवं रिश्तेदारी दिखाई दे रही है। जिसके फलस्वरुप विरोधक एवं सत्ताधारी जनता की जगह एक-दूसरे के लिए काम करते हुए नजर आ रहे हैं। यहाँ की सरकारी नखख़ाश में बदल गयी है। गाँव के लोग आज भी गरीबी एवं भुखमरी के शिकार हो रहे है। राजधानियों में विधानसभा, लोकसभा, विधान परिषद और राज्यसभाओं में जो लोग चुनकर जाते है वे केवल सत्ताधारी एवं विरोधी दल की भूमिका निभा रहे है। आग और पानी की दोस्ती हमें इस राजनीति में दिखाई दे रही है। उसका यथार्थ विकृत रुप जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में दिखाई देता है-

"गाँव में उस भूख का परिवार बसता है

Scanned with CamScanner

जिसपे बहसें हो रही थीं राजधानी में।
इस रियायत ने ये जादू कर दिखाया है
दोस्ती होने लगी है आग-पानी में।"[5]

सत्ताधारियों की भाषा में जो दण्डितशाही एवं गुंडागिरी दिखाई देती है। उससे उनकी अधिकार की भाषा प्रस्तुत होती है। सत्ताधारी कभी प्यार एवं ममता की बातें नहीं करते। राजाओं के दरबार के समान ही आज नेताओं की भाषा तब्दील हो रही है। विरोधी दल की भाषा विपक्ष प्रयुक्त करता है परंतु यथार्थ यह है कि ये लोग एक- दूसरे का विरोध नहीं करते। आजकल हमें चुनावों के दौर में विभिन्न लोगों के असली चेहरे दिखाई देते है। यही बात जहीर खुलकर रखते हैं-

"जिस जुबाँ पर चढ़ गई है अधिकार की भाषा
उसको फिर आती नहीं है प्यार की भाषा।
इन प्रजातंत्रीय राजाओं की चौखट पर
फलती-फूलती रही दरबार की भाषा।
इनकी बातों में विरोधी दल का लहजा है
और उनके पास है सरकार की भाषा।"[6]

इस तरह हमें जहीर कुरेशी की गज़लें राजनीति की विसंगतियों, कुरुपताओं एवं विकृतियों के यथार्थ दर्शन करवाती है। राजनीति द्वारा जातियाद, धर्मवाद, साम्प्रदायिकता, मंदिर-मस्जिद, जैसी विभिन्न समस्याएँ एवं सवालों को चुनाव के समय प्रस्तुत किया जाता है। भारत में राम-मंदिर जैसी समस्या को प्रत्येक चुनाव में केंद्र में लाया जाता है। महज वोट की राजनीति देश में की जा रही है। चुनाव होने के बाद घोषणाओं एवं आश्वासनों को भूलकर भ्रष्टाचार कर स्वयं का स्वार्थ साधने का काम यह राजनीति करती हुई नजर आती है। आज विकास एवं प्रगति की जगह देश में बेरोजगारी एवं आर्थिक मंदी जैसी समस्याएँ निर्माण हुई है। परंतु देश की राजनीति 370 अनुच्छेद और कश्मीर के प्रश्न की ओर आम आदमी का लक्ष्य आकर्षित कर रही है। यह भयावह यथार्थता जहीर की गज़लों में स्पष्ट होती है।

"बातों से सिर्फ बातों से ऐसा किया गया
लोगों के सामने उसे नंगा किया गया।
इस राजनीति द्वारा महज वोट के लिए
जलते हुए सवालों को पैदा किया गया।"[5]

दंगे- फसाद एवं जातियवादी एवं धर्मवादी मसले तैयार कर जनता को आपस में लड़वाना इन राजनीतिक नेताओं का आम काम हो गया है। लोग स्वयं के प्रश्न भूलकर नेताओं के इशारों पर काम करते हैं। नुकसान सामान्य मनुष्य का ही होता है। इन राजनेताओं को जहीर कुरेशी दण्ड देना चाहते है। जहीर कुरेशी को जानकारी है कि जनता ही नेताओं को सजा दे सकती है। जो लोग भ्रष्टाचार की राजनीति कर मुख्य समस्याओं को झोंककर नयी समस्याएँ निर्माण कर उसमें मनुष्य को या आम आदमी को उलझायें रखते हैं। इसका चित्रण जहीर करते है। जनता को इस नयी राजनीति को समझाना एवं दण्ड देना जरुरी है ऐसा जहीर कहते है-

"दण्ड दे सकता है उनको सिर्फ जनमत ही
देश को पहना रहे जो शेरवानी में।"[6]

प्रियसी से बात करनेवाली गज़ल के माध्यम से जहीर समसामयिक समस्याओं से परिचित करवाते है। जहीर कुरेशी स्वयं को आम आदमी ही मानते हैं। उन्हें अपनी देश की समस्याओं की जानकारी है। इसलिए वे गज़ल-लेखन सामान्य मनुष्य के लिए ही करते है। ऐसा दिखाई देता है। हिंदी कविता की समकालीन साहित्य परंपरा उनके गज़लों में भी दिखाई देती है। समाज में व्याप्त अज्ञान, भ्रष्टाचार एवं अंधश्रध्दा रुपी अंधकार को समाप्त कर उजाला लाने की कोशिश जहीर कर रहे है। उर्दू-फारसी गज़ल परंपरा को तोडकर हिंदी साहित्य परंपरा एवं दुष्यंतकुमार और महाप्राण निराला की परंपराओं के साथ जहीर की गज़लें सामने आती है। दुष्यंतकुमार जिस तरह कहते है कि मुझमें करोंडों लोग रहते हैं चूप कैसे रहूँ वैसे ही जहीर भी आम आदमी एवं पूरे भारत की सामान्य, शोषित एवं उपेक्षित जनता को अपने आप में महसूस करते हैं। उनके शेर बिरहन के पीर के न होकर अँधेरे से लड़नेवाले आम आदमी के दुःख-दर्द एवं समस्याओं को व्यक्त करनेवाले है। उन्हीं के शब्दों में देखिए।

"किस्से नहीं है ये किसी बिरहन की पीर के
ये शेर है- अंधेरो से लड़ते जहीर के।
मै आम आदमी हूँ तुम्हारा ही आदमी
तुम काश देख पाते मेरे दिल को चीर के।"[7]

इस तरह जहीर लोगों को दिल चिरकर दिखाना चाहते हैं कि मै केवल आम आदमी का हूँ। काश दिल चिराने की सुविधा होती तो मै आपके लिए यह काम ही करने को तैयार हूँ।

जहीर कुरेशी अंधकार से लड़ते ही नहीं संघर्ष करना भी जानते है। उन्हें पूरा विश्वास है कि हमारे संघर्ष को यश जरुर मिलनेवाला है। उन्हें पूरी आशा एवं उम्मीद है कि वे इस अंधकार को समाप्त करनेवाले ही है। जहीर कहते है कि अंधकार के बाद ही उजाला आता है। रात के बाद ही सुबह होती है। हमें यह सलाह भी जहीर देते हैं कि आपके इस संघर्ष एवं विद्रोह के रास्ते में

Scanned with CamScanner

आपको यह सोचकर ही गुजरना है कि सुहानी भोर- सुबह हमेशा रात के अंधकार से ही निकलती है। उन्हीं के शब्दों में देखिये-

"ये सोचकर ही तुम्हें रात से गुजरना है
सुहानी भोर सदा अंधकार से निकली।"*

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदी ग़ज़ल समसामयिक समस्या को सशक्त रूप में अभिव्यक्त करने में सफल रही है। दुष्यंतकुमार की परंपरा को जहीर कुरेशी निभाने की कोशिश कर रहे है। समकालीन ग़ज़लकारों में जहीर कुरेशी एक महत्वपूर्ण नाम है। राजनीति को गणिका के समान वर्तमान समय की कुरूपता के साथ जहीर प्रस्तुत करते है। निष्ठा, तत्व एवं विचारों की जगह हमें आज जातिवाद, दंगे-फसाद एवं दलबदलू राजनीति दिखाई दे रही है। कमीशन एवं आयोग के कागजी घोड़े हमें जहीर की ग़ज़लें दिखाती है। भ्रष्टाचार एवं भाई-भतीजावाद को जहीर के गजलें अभिव्यक्त करती हैं। राजनीतिक नेताओं की असफलता एवं जनता के मोहभंग को जहीर अभिव्यक्त करते है। सत्तारूढ़ नेता एवं विपक्ष की नाटकीय भूमिका जहीर उजागर करते हैं। जात, धर्म, साम्प्रदायिकता, मन्दिर-मस्जिद जैसे सवालों को उठाकर वोट की राजनीति करनेवाली प्रवृत्ति को जहीर उजागर करने में सफल हुए है। आम आदमी की प्राथमिक जरुरतों को भी सत्तर साल बाद पूरा नहीं कर सकी। इस विडंबना को जहीर ठोस एवं तीखे शब्दों के माध्यम से तीर चलाने का काम करते है। इस संघर्षमय आंदोलन में जहीर आशा एवं उम्मीद के साथ उजाला एवं सुहानी भोर आनेवाली है यह विश्वास आम आदमी को अपनी ग़ज़ल के माध्यम से दे रहे है। राजनीतिक भ्रष्टाचार, विसंगतियाँ, कुरूपताओं एवं विद्रूपताओं की जगह जनमत के द्वारा घराणेशाही एवं भाई-भतीजावाद समाप्त करने की कोशिश जहीर करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

1. जहीर कुरेशी की चुनिंदा ग़ज़लें- संपा. डॉ.मधु खराटे, पृ.75
2. वही, पृ.117
3. वही, पृ.94
4. वही, पृ.107
5. वही, पृ.114
6. वही, पृ.94
7. वही, पृ.69
8. वही, पृ.88

□□□

Scanned with CamScanner